प्रीत न करियो कोय

भूमिका

'गुलज़ार देहलवी'

अकमल (पूर्ण) कोई इंसान कहाँ होता है !
तक़मील(पूर्णता) का सामान कहाँ होता है !
एक फ़न पे भी क़ुदरत को गनीमत जानो
हर इल्म का इरफ़ान कहाँ होता है !
---'गुलज़ार देहलवी'

श्री गुलाब खंडेलवाल से मेरी पहली मुलाकात ९ दिसंबर, १९९० को क्लीवलैंड (Cleveland), ओहायो (Ohio) उत्तरी अमरीका में एक मुशायरे की महफ़िल में हुई, जो बज़्मे अदब क्लीवलैंड की जानिब से उसके सदर, श्री खन्ना 'गौहर मुरादाबादी' साहब, ने मेरे स्वागत में आयोजित किया था। वहाँ हिन्दोस्तान और पाकिस्तान के करीब १००-१५० साहित्यकार, कवि, प्रोफेसर, वकील, डॉक्टर, इंजीनियर और साहित्यप्रेमी व्यवसायी मौजूद थे। प्रोफेसर अली मीनाई, बेग़म शाहिदा नसीम, सालिक, अब्दुल वहाब साहब और श्री राजेन्द्र खन्ना 'गौहर' के अलावा गुलाब साहब भी तशरीफ फरमा रहे थे। आपने जो कलाम वहाँ सुनाया उसमें हिन्दी की खनक और उर्दू की महक का बहुत मुनासिब समन्वय पाया। ख़यालात की बुलंदी और मज़ामीन की गहराई दोनों हिमालय से बहरे हिन्द तक का मज़ा दे रही थी। उसके बाद कोलंबस में भी आपका कलाम सुना। गुलाबजी की शख़्सियत हिन्दी जगत के लिए एक वरदान और प्रसाद तो है ही, इसके साथ उनकी इंसानियत तथा इत्तेहाद, समन्वय, एकता, विश्वशान्ति और विश्वमैत्री की भावनाओं की ख़ुशबू भारत-पाक महादेश के हिन्दू-मुसलमानों के लिए अनुकरणीय और भारत के हिन्दी भाषा-भाषी लेखकों के लिए एक अनूठी मिसाल भी है। आपका दिल और दिमाग विशाल, रौशन-ख़याल और रौशन ज़मीर वजूद का हामिल है। गुलाबजी अखिल

भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मलेन प्रयाग के सभापति हैं। आजकल छः महीना अमरीका में और छः महीना हिन्दुस्तान में रहते हैं।

आपकी शख़्सियत और फ़न, क़लाम, और तहरीर में सुबहे बनारस, शामे अवध, शबे मालवा और राजस्थान का गुलाबी रंग मिलकर अजीब बाग़बहार कला और साहित्य का त्रिवेणी-संगम बनाता है। क्यूँकि गया, बनारस, इलाहाबाद, लखनऊ, देहली और जयपुर से आपका एक-सा ख़ानदानी मसकानी ताल्लुक रहा है। आप अनेक पुस्तकों के रचयिता है।

नज़्म और नस्र (गद्य) दोनों में आपकी लेखनी एक-सी रवानी से चलती है। हिन्दी नौ रस की तरह उर्दू बहरों और ज़मीनों में भी बेतक़ल्लुफ शायरी करते हैं। कविता में वीर रस, श्रृंगार रस, भक्ति रस, हास्य रस और गद्य और पद्य के अलावा निहायत शौक़, वलवला, उमंग, तरंग और दिलचस्पी से उर्दू की ग़ज़ल, क़ता, रुबाई और मसनवी पर भी तबा-आज़माई (काव्य-रचना) करते हैं। ये रंगारंग मुत्ज़ाद और मुख़्तलिफ़ शैलियाँ कुदरत ने आपको ऐसी अता की है, जिसके सबब आप हिन्दी के अज़ीम (महान) शायर और विद्वान, 'साहित्य-वाचस्पति' होने के साथ-साथ उर्दू के भी परवाने और उर्दू-दोस्त, उर्दू-परस्त, अदीब और शायर भी क़रार पाते हैं।

आपकी जात और शख़्सियत की तरह आपका इल्म और फ़न और शायरी भी हर तरह के तास्सुबात(पूर्वाग्रह), तंग नज़री, और नफरत से पाक और शायरी भी पाक और साफ-सुथरी शायरी है। आप वसीउल नज़र, वसीउल ख़याल, एक बड़े, और सेहतमंद दिलोदिमाग के हामिल हैं जिसकी आज के हिन्दोस्तान को असद ज़रूरत है। आप मज़हब, जातपात, ज़बान और वतन की महदूद सरहदों में जकड़े हुए नहीं हैं। बल्कि मानवता और विश्व प्रेम आपका तुर्राये इन्तियाज़ (पहचान) है, यानी एक सच्चे मानवतावादी लेखक की तरह मानव जाति के लिए एक मिसाल हैं।

आपकी लगभग पचास क़िताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। अभी ९ जुलाई, १९९७ ई. को राष्ट्रपति भवन में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति, डॉ. शंकरदयाल शर्माजी, के करकमलों द्वारा आपके लिखे भक्तिरस के दो नए संग्रहों का इज़रा (लोकार्पण) हुआ जिसका

परिचय करने के लिए आपने नई दिल्ली में मेरा इंतखाब (चुनाव) किया।

आपकी एक ताज़ा तरीन रचना, बशक्ल उर्दू मसनवी, उनकी रवायत की शान के साथ बउनवान, 'प्रीत न करियो कोय', प्रकाशित हो रही है। इसमें एक इश्किया कहानी है, जिसे ताजमहल आगरा के रौशन सब्ज़ज़ारों के माहौल में परवान चढ़ाया गया है। जिस तरह उर्दू में 'बद्रे मुनीर' मसनवी, मीर हसन देहलवी और 'गुलबकावली' मसनवी, पं. दयाशंकर 'नसीम' अपना ज़बरदस्त मुकाम रखती है, उसी तरह 'हिन्दी-उर्दू' की यह मुस्तरका (मिलीजुली) मसनवी एक अनोखा और नादिर (अनूठा) दर्जा रखती है और अपनी मिसाल आप है।

इस मसनवी में तमहीद (प्रवेश) मतन (विषय) व मज़मून (मोड़), गुरेज़, दोआ, कहानी की वो तमाम रवायत (परम्परा) बरती गयी हैं, जो एक मसनवी के लिए ज़रूरी है, और बहर भी तकरीबन ज़्यादातर मसनवी ही की परम्परागत बहर है, जो उर्दू का इम्तियाज़ (विशेषता) है और जिसे गुलाबजी ने हिन्दी में पुरकारी से बरता है। क़ाबिले लेहाज़ ढाँचा और ज़बान उर्दू ही है। अलबत्ता कहीं-कहीं रदीफ़, काफ़िया की ज़रूरत और हिन्दी रवायात के चलन की आदत की वज़ह से हिन्दी अलफ़ाज़ तराकीद (शब्दावली), कसौती (उच्चारण पर आधारित), हिन्दी काफ़िया, महावरात और कहावतों की मिसालें इस्तेमाल की गयी हैं, जो मुँह के मज़े को और सलोना करती हैं। हिन्दी के कवि की उर्दू में तबा-आज़माई (काव्य-रचना) और उर्दू के शायर की हिन्दी तर्ज़ को अपनाने की रवायात में गुलाब खंडेलवाल साहब का कलाम संगेमीर साबित होगा। ज़बान सादा, आमफ़हम, रवाँ और दिलनवाज़ है। तस्बीह (उपमा), हवाले (सन्दर्भ) और हुनरे बयान बिलकुल उर्दू मसनवी का अक्स है। इसी तरह आपने ग़ज़ल, क़ता और रुबाई लिखने में भी कामयाब तज़रबे किये हैं। नए हिन्दोस्तान को और हिन्दोस्तानी पाकिस्तानी अदीबों को इस मिसाल से सबक हासिल करना चाहिए और इन तज़ेबात का चलन आम होना चाहिए। इससे हमारे मुल्क में मुश्तर्का तहज़ीब (संस्कृति), गंगा जमुनी, मिलीजुली सभ्यता और संस्कृति को ताकत मिलेगी और

एक नवीन और उज्जवल ताकतवर और मज़बूत हिन्दोस्तान जन्म लेगा और खुसरो, दाराशिकोह, कबीर और नज़ीर की कोशिशें आगे बढ़ेंगी।

मैं श्री गुलाब खंडेलवाल को इस मसनवी के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई देता हूँ और दुआ करता हूँ को इसे क़बूले आम की सनद हासिल हो और देवनगरी, हिन्दी, खड़ी बोली, हिन्दी व उर्दू दोनों ज़बानों के अदब में हुनर कबूल अता हो। चूँकि आप इस मसनवी को दोनों लिपियों में प्रकाशित कर रहे हैं इसलिए इसकी कामयाबी का इमकान (संभावना) दोबाला हो जाता है।

मैं हिन्दी-उर्दू के साहित्य-प्रेमियों से अपील करता हूँ कि वे 'प्रीत न करियो कोय' मसनवी को ज़रूर पढ़कर सुरूर हासिल करें। ख़ुदा गुलाब खंडेलवाल को इस तजुरबे पर कामयाबी अता फरमायें और आप और अधिक सुर्खरूह हों। नए लिखनेवालों के लिए यह मसनवी मिसाले राह साबित हो।

हिन्दी-उर्दू दोस्ती ज़िंदाबाद!

शायरेकौम, डॉक्टर, पंडित
आनंद मोहन जुत्सी, 'गुलज़ार देहलवी'